OM 18_Page 1 and 2 01-12-2014 20:05 Page 8

कथा सरिता

दिमाग में महल

एक संत जंगल में प्रभु-आराधना किया करते थे। उनकी तपस्या की ख्याति चारो ओर फैली हुई थी। एक बार राजा संत के दर्शन करने पहुँचे। संत ने राजा को अकेला देखकर पूछा-राजन, आपके साथ महारानी क्यों नहीं आयीं? राजा ने कहा- गुरुदेव! महारानी भी आपके दर्शन करना चाहती थीं, पर राजमर्यादा के कारण वह महल से बाहर जंगल में आपके दर्शन करने नहीं आ सकतीं। गुरुदेव आप स्वयं महल पधार कर महारानी को आशीर्वाद दें, तो आपकी बड़ी कृपा होगी। संत महल में चलने के लिए तैयार हो गए। महल पहुँचकर संत ने महारानी को आशीर्वाद दिया। राजा ने आग्रह किया-महाराज! आप आये हैं तो कुछ दिन महल में ही रुकिए ताकि हमें आपकी सेवा का मौका मिल सके।

संत महल में रुकने को तैयार हो गए। एक महीना बीत गया, पर संत वापस नहीं गए। राजा ने सोचा- संत तो यहीं जम गए हैं, महल छोड़ ही नहीं रहे हैं। क्या करें? एक दिन राजा ने कहा-महाराज! आपको तो जंगल में रहना अच्छा लगता है। मैं वहीं जा रहा हूँ, क्या आप भी चलेंगे? सन्यासी ने उत्तर दिया- हाँ अवश्य। राजा और संत जंगल की ओर चल दिये। चलते-चलते वे उसी स्थान पर जा पहुँचे, जहाँ पेड़ के नीचे संत बैठते थे। संत उसी जगह पर जाकर वापस बैठ गए। कुछ समय बाद राजा ने कहा-महाराज! मैं तो वापस महल में जा रहा हूँ, आप भी मेरे साथ चलेंगे? संत बोले- अब नहीं जाऊँगा। यहीं रहूँगा।

राजा ने सवाल किया-महाराज! मैं महल में रहता हूँ, आप भी कुछ दिन महल में रहे। आपमें और मुझमें अंतर क्या रहा? तब संत ने कहा-राजन! इतना ही फर्क है कि मैं महल में रहा और तुम्हारे दिमाग में महल रहता है।

राजा ने कहा-महाराज! मैं कुछ समझा नहीं। तब संत ने राजा को समझाया-राजन्! मैं महल में जीवन चलाने के लिए रहा। यह मेरी ज़रूरत थी। पर तुम्हारे लिए तो महल में रहना ही जीवन बन गया है। यह शानोशौकत दिखाने का ज़रिया बन गया है। संत की बात सुनकर राजा को अपनी गलती का एहसास हुआ।

कायम रखा अनुशासन

घटना उन दिनों की है, जब बगदाद में खलीफा उमर का शासन था। वे अपनी प्रजा के सच्चे अर्थों में संरक्षक थे। उनके राज में कभी प्रजा अत्याचार का शिकार नहीं हुई। खलीफा नेकदिल और इंसाफ पसंद व्यक्ति थे। नियमों का पालन उनकी प्रजा से लेकर हर खास अधिकारी तक होता था। वे स्वयं भी नियमों के पाबंद थे। अनुशासनप्रियता उनके स्वभाव में थी। एक बार उन्हें शिकायत मिली कि राज्य में शराबियों का उत्पात बढ़ रहा है। खलीफा नैतिक मूल्यों को लेकर भी अत्यंत सजग थे। उन्होंने अपने राज्य के शराबियों की शराब की लत छुड़ाने के लिए घोषणा की, 'यदि कोई व्यक्ति शराब पीता हुआ या पीये हुए पकड़ा गया तो उसे भरे दरबार में 25 कोड़े लगाए जायेंगे।' उनकी इस घोषणा ने पूरे राज्य में शराबियों में खलबली मचा दी। चूंकि व्यसनों के आदी लोग इच्छाशक्ति के अभाव में अपने व्यसन नहीं त्याग पा रहे थे, इसलिए उन्होंने खलीफा को आदेश वापस लेने पर मजबूर करने के लिए खलीफा के पुत्र को शराब पिलाकर बाज़ार में छोड़ दिया। सैनिकों ने उसकी यह दशा देखकर उसे तुरंत खलीफा के समक्ष दरबार में पेश किया। खलीफा ने बिना संकोच आदेश दिया, 'अपराधी की नंगी पीठ पर 25 कोड़े लगाए जायें।' दरबारियों ने खलीफा को समझाने की बहुत कोशिश की, किंतु वे नहीं माने। अंततः खलीफा के पुत्र को कोड़े लगाए गए। वह बेहोश होकर गिर पड़ा और कुछ ही देर में उसकी मृत्यु हो गई। उस दिन से खलीफा का राज्य शराबियों से मुक्त हो गया। सभी के लिए समान रूप से नियमों का पालन करने पर अनुशासन बना रहता है और अनुशासन से सुगठित सामाजिक व्यवस्था स्थापित होती है।

खुशी का टोटका

एक नगर में एक आदमी रहता था। वह अपनी जेब में एक सिक्का रखता था। उसके एक ओर खुशी खुदी हुई थी और दूसरी ओर नाखुशी। वह रोज़ सुबह उठकर सिक्का उछालता, मुट्ठी में लेता और खोलकर देखता। अगर खुशी वाला निकलता तो वह खुश हो जाता, कि आज तो मेरा दिन बहुत अच्छा कटेगा। अगर कभी नाखुशी वाला पहलू आता, तो वह उदास हो जाता, अपने भाग्य को कोसने लगता, पता नहीं आज का दिन कैसा बीतेगा?

एक दिन वह आदमी एक फकीर के पास गया। उसने फकीर को सिक्के की बात सुनाई और कहा कि जब खुशी वाला पहलू आ जाता है तो मैं बहुत खुश हो जाता हूँ और जिस दिन नाखुशी वाला पहलू आ जाए तो मेरा पूरा दिन बेकार जाता है। फिर मुझसे कोई काम नहीं हो पाता।

कृपा कर इस समस्या का कोई उपाय बताएं। फकीर ने कहा-अगर सिक्के से ऐसा होता है, तो कुछ समय के लिए अपना सिक्का मुझे दे दो। कल आकर ले जाना, मैं इसपर मंत्र फूंक दूंगा।

अगले दिन आदमी आया और फकीर ने उसका सिक्का वापस लौटा दिया। आदमी खुशी-खुशी अपने घर लौट गया। एक महीने बाद वह फकीर से मिलने आया और कहने लगा-बाबा, आपने गजब का मंत्र फूंका है। जिस दिन से आपने यह सिक्का मंत्र पढ़कर दिया है, उस दिन से नाखुशी वाला हिस्सा कभी उभरकर ही नहीं आया। जब भी सिक्का उछालता हूँ, खुशी वाला हिस्सा ही आता है। फकीर ने कहा-भक्त, मैंने सिक्के पर कोई मंत्र नहीं फूंका है। मैंने तो इसमें इतना ही टोटका किया है कि जहाँ पहले नाखुशी लिखा था, उसमें से ना शब्द हटा दिया। अब दोनों ओर खुशी है। इधर उछले तो भी खुशी और उधर उछले तो भी खुशी। फकीर की बात सुनकर भक्त समझ गया कि खुशी कहीं बाहर नहीं खुद के दिल में ही छुपी है। ज़रूरत बस नकारात्मकता को दूर करना भर है, फिर तो ज़िन्दगी में खुशियां ही खुशियां हैं।

ज्ञान का द्वार

एक गाँव में एक विद्वान रहता था। एक बार गाँव में एक ज्ञानी महात्मा आए। महात्मा पहाड़ी पर बनी झोपड़ी में ठहर गए। विद्वान, महात्मा से मिलने के लिए घर से निकला। उसने महात्मा से मिलने के लिए बहुत दूरी तय की। महात्मा की झोपड़ी तक पहुँचते-पहुँचते विद्वान थक गया। लम्बी यात्रा और थकान के कारण वह चिड़चिड़ा हो गया। महात्मा की झोपड़ी में जाने के लिए उसने ज़ोर से दरवाज़ा खोला और अंदर प्रवेश करके धड़ाम से दरवाज़ा बंद कर दिया। फिर जूतों को बेतरतीब इधर-उधर खोलकर वह महात्मा के पास गया। महात्मा को नमन करके विद्वान उनके पास बैठ गया और बोला-महात्मन्! मैं आपके पास ज्ञान के बारे में संवाद करने आया हूँ। महात्मा ने कहा-भाई! संवाद तो तभी हो सकता है जब तुम प्रेमपूर्ण बनो। अभी तो विवाद ही हो सकता है, क्योंकि तुम प्रेमपूर्ण नहीं हो। विद्वान ने कहा-महात्मन्! ये आप क्या कह रहे हैं? मेरी आपसे कोई दुश्मनी नहीं है। मैं तो प्रेमभाव से ही भरा हूँ। आपके प्रेम में डूबकर ही तो मैं इतनी दूर चला आया। महात्मा ने कहा- भाई! तुम भूल रहे हो। प्रेम केवल मुझसे नहीं करना है। तुम्हें उन जूतों के साथ भी प्रेमपूर्ण व्यवहार करना होगा, उस दरवाज़े के साथ भी प्रेमल व्यवहार करना होगा।

विद्वान सोच में पड़ गया। उसने पूछा- दरवाज़े और जूते से प्रेमपूर्ण व्यवहार करने से आपका क्या मतलब? उनसे प्रेमल व्यवहार कैसे करूँ? महात्मा ने कहा-जूतों के पास जाओ और उनसे माफी मांगो कि आगे से तुम उन्हें गुस्से में आकर बेतरतीब नहीं खोलोगे। इसी तरह दरवाज़े के पास जाओ और उनसे माफी मांगो कि अगली बार से तुम उसे प्यार से खोलोगे।

विद्वान ने पूछा-इससे क्या होगा? क्या जूते और दरवाज़े मेरे प्रेम को समझ पायेंगे? महात्मा ने कहा-जैसा मैंने कहा है, तुम वैसा ही करो। जूता और दरवाज़ा तुम्हारी बात समझें न समझें, तुम स्वयं अवश्य समझ जाओगे और संसार में सबको प्रेम बांटते रहोगे। प्रेम ही ज्ञान का द्वार है। इसी रास्ते ज्ञान हृदय में प्रवेश करता है।

कोचीन। न्यायाधीश वी.आर. कृष्णा अय्यर के जन्मदिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से केक काटते हुए अय्यर जी। साथ हैं ब्र.कु. राधा, ब्र.कु. वसन तथा अन्य ब्र.कु. भाई।

राजकोट-गुज.। 16 नवम्बर 'वर्ल्ड डे ऑफ रिमेम्बरेन्स फॉर रोड ट्रैफिक विक्टिम्स' के दिन दु:खी अशांत आत्माओं को शांति का दान देते हुए ब्र.कु. रेखा। साथ हैं समाज सेवक संजय भाई हिरानी, किशोर भाई राठोड़ तथा अन्य।

मुम्बई-कल्याण। 'अलविदा डायबिटीज़' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करने के बाद मंच पर डॉ. श्रीमंत साहु, विधायक नरेन्द्र पवार, कमिश्नर जीवन सोनावणे, ब्र.कु. अल्का, व्यापारी एसोसिएशन के अध्यक्ष विजय पंडित तथा अतिथिगण।

गिदड़वाहा-पंजाब। डी.ए.वी. कॉलेज में डायबिटीज़ अवेयरनेस और फास्ट फूड के विषय में समझाते हुए ब्र.कु. रजनी।

नारनौल-हरियाणा। 'वाह ज़िन्दगी वाह' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. शुक्ला, ब्र.कु. रतन, ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. सुरेश।

कानपुर-घाटमपुर। एस.डी.एम. के.पी.सिंह को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करके मीडिया की गतिविधियों से अवगत कराते हुए ब्र.कु. कपूर तथा ब्र.कु. अनुराधा।